शैक्षिक सत्र–2025–26
(27) ट्रेड–सहकारिता
कक्षा–12

पाठ्यक्रम की उपयोगितायें

सहकारिता ग्रुप का अध्ययन करने के पश्चात् छात्रों को निम्न प्रकार के रोजगार प्राप्ति में सहायता मिल सकती है–

(अ) वेतन रोजगार–

(1) सहकारी समितियों, सहायक के विभिन्न स्तरों पर कार्य कर सकता है।
(2) प्राथमिक स्तर एवं केन्द्रीय स्तर के अधिकारी के रूप में कार्य कर सकता है।
(3) सहकारी अन्वेषक एवं अंकेक्षण के रूप में कार्य कर सकता है।

(ब) स्वतः रोजगार–

(1) स्वतः व्यवसाय–उत्पादन, वितरण, उपभोग एवं वित्त के क्षेत्र में सहकारी समिति के निर्माण द्वारा।
(2) अन्य सहकारी समितियों के विभिन्न पक्षों पर परामर्शदाता के रूप में।
(3) सहकारी समितियों के प्रवर्तक के रूप में।

उद्देश्य–

(1) सहकारिता क्षेत्र में कार्य करने हेतु सहकारिता सम्बन्धी सिद्धान्त, व्यवहार एवं कार्य विधि का ज्ञान एवं विकास करना।
(2) सहकारिता के क्षेत्र में वेतन एवं स्वतः रोजगारों के लिये पर्याप्त क्षमता एवं योग्यता का विकास करना।
(3) उपभोग एवं उत्पादन एवं वितरण के क्षेत्र में सहकारिता में संलग्न व्यक्तियों के ज्ञान एवं व्यक्तित्व का विकास करना।
(4) देश के आर्थिक व सामाजिक विकास में सहकारी आन्दोलन के महत्वपूर्ण योगदान से विद्यार्थियों को परिचित कराना।

पाठ्यक्रम–

इस ट्रेड में तीन–तीन घन्टे के पॅाच प्रश्न–पत्र और प्रयोगात्मक परीक्षा भी होगी। अंकों का विभाजन निम्नवत् रहेगा–

(क) सैद्धान्तिक–

	पूर्णांक		उत्तीर्णांक	
प्रथम प्रश्न–पत्र–बहीखाता तथा लेखाशास्त्र–I	60		20	
द्वितीय प्रश्न–पत्र–बहीखाता तथा लेखाशास्त्र–II	60	300	20	100
तृतीय प्रश्न–पत्र–व्यावसायिक एवं कार्यालय संगठन	60		20	
चतुर्थ प्रश्न–पत्र–सहकारिता	60		20	
पंचम प्रश्न–पत्र–सहकारिता	60		20	
(ख) प्रयोगात्मक–				
आन्तरिक परीक्षा	200	400	200	
बाह्य परीक्षा	200			

टीप–परीक्षार्थियों को प्रत्येक लिखित प्रश्न–पत्र में न्यूनतम उत्तीर्णांक 20 तथा योग में 33 प्रतिशत अंक एवं प्रयोगात्मक परीक्षा में 50 प्रतिशत उत्तीर्णांक पाना आवश्यक है।

सैद्धान्तिक पाठ्यक्रम

प्रथम प्रश्न–पत्र

(बहीखाता तथा लेखाशास्त्र–I)

अधिकतम अंक–60
न्यूनतम अंक–20

1–प्रेषण, संयुक्त साहस खाते, चालू हिसाब और औसत भुगतान विधि। 20
2–साझेदारी फर्म के खाते–प्रवेश निवृत्ति, मृत्यु तथा साझेदारी समापन की दशा में। 20
3–भारतीय बहीखाता पद्धति के सैद्धान्तिक अध्ययन और बहियों का प्रयोग। 20

द्वितीय प्रश्न–पत्र

(बहीखाता तथा लेखाशास्त्र–II)

अधिकतम अंक–60
न्यूनतम अंक–20

1–कम्पनी खाते–अंशों का निर्गमन तथा आहरण, बोनस अंश, ऋण–पत्रों का निर्गमन एवं शोधन, कम्पनी के अन्तिम खाते (कम्पनी अधिनियम, 1958 के अनुसार) 20
2–इकहरा लेखा प्रणाली उधार, क्रय एवं बिक्रय निकालना, देय बिल एवं प्राप्त बिल। 20

3—सहकारिता समितियों सम्बन्धी लेखें। 20

तृतीय प्रश्न—पत्र
(व्यावसायिक एवं कार्यालय संगठन)

अधिकतम अंक—60
न्यूनतम अंक—20

1—कार्यालय उपक्रम—श्रम, बचत, उपकरण। 20

2—विवरण के माध्यम—थोक व्यापार, फुटकर व्यापार, श्रृंखला दुकानें, विभागीय भण्डार, डाक द्वारा व्यापार।20

3—बीजक (देशी तथा विदेशी) तथा बिक्री विवरण तैयार करना। 20

चतुर्थ प्रश्न—पत्र
(सहकारिता)

अधिकतम अंक—60
न्यूनतम अंक—20

1—निर्वाचन एवं निर्वाचित अधिकारियों द्वारा प्रशासन—प्राथमिक सहकारी समितियों में निर्वाचन की प्रक्रिया तथा निर्वाचित व्यक्तियों द्वारा प्रशासन। 20

2—समस्यायें एवं सुझाव—दायित्व की समस्या, एकांकी एवं संघीय संगठन, एक उद्देशीय एवं बहुउद्देशीय से द्विवर्गीय समस्यायें, वित्तीय एवं प्रशासकीय, गैर सरकारी योगदान, विभिन्न सहकारी समितियों के समन्वय सम्बन्धी समस्या, विभिन्न समस्याओं से सम्बन्धित सुझाव, उत्पादन विवरण, उद्योग एवं वित्त के अन्त मध्य समन्वयन। 20

3—सहकारी नेतृत्व—नेतृत्व के आवश्यक गुण, इसकी समस्यायें, सहकारिता, शिक्षण, महत्व, पद्धतियां, सरकारी एवं गैर सरकारी प्रशिक्षण। 20

पंचम प्रश्न—पत्र
(सहकारिता)

अधिकतम अंक—60
न्यूनतम अंक—20

1—उपभोक्ता सहकारी समितियां—प्रारूप, प्रकार, कार्य, महत्व एवं विकास, उपभोक्ता समितियां, संगठन प्रबन्ध, सदस्यता, वित्त व्यवस्था एवं सरकारी नियंत्रण, ऋण, रिपोर्ट समस्यायें एवं सुझाव। 20

2—अन्य सहकारी समितियां—भवन निर्माण सहकारी समितियां, श्रम सहकारी समितियां, औद्योगिक सहकारी समितियां, दुग्ध, मत्स्य, कुक्कुट पालन आदि। 10

3—सहकारी समितियों के निबन्धन सम्बन्धी प्रालेख, सहकारी समितियों के वित्तीय विवरण सम्बन्ध प्रलेख, कार्यवाहक पुस्तक। 10

4—सहकारी समितियों के वित्तीय विवरण सम्बन्धी प्रलेख—लाभ—हानि खाता, आर्थिक चिट्ठा, अंकेक्षण रिपोर्ट इत्यादि। 20

प्रायोगिक पाठ्यक्रम

पूर्णांक—400
न्यूनतम अंक—200

बड़े प्रयोग—

1—दिये गये निर्देशों के अनुसार पत्र तैयार करना, पूंछ—ताछ के पत्र, निर्ख (कोटेशन), आदेश पत्र, सूचना पत्र, सन्दर्भ पत्र, आदेश पत्र, विक्रय पत्र, ग्राहकों को क्रय हेतु प्रेरित करने वाले पत्र, तकादे के पत्र, स्मृति—पत्र, शिकायती—पत्र, गश्ती पत्र, एजेन्सी सम्बन्धी—पत्र, बैंक व बीमा सम्बन्धी पत्र, परिचय.पत्र, सरकारी.पत्र, अर्द्ध सरकारी.पत्र, आवदेन—पत्र, साक्षात्कार पत्र, नियुक्ति—पत्र।

2—सचिवीय कार्य प्रणाली का ज्ञान—कार्य सूची तैयार करना, सभा बुलाना, सभा की कार्यवाही का संचालन एवं सभा सूक्ष्म (मिनट) तैयार करना।

3—सहकारी बैंकों में पे—इन स्लिप, पास—बुक, रजिस्टर एवं चेकों की जांच करना एवं भवनों, पास—बुक के व्यवहारों का ज्ञान प्राप्त करना, वाउचर, कैश—मेमो, जमा तथा नाम पत्र, खाता विवरण, साप्ताहिक रिटर्न आदि तैयार करना एवं प्रधान कार्यालय भेजना।

छोटे प्रयोग—

4—श्रम संचय यंत्रों का व्यावहारिक ज्ञान एवं रेडी रिकनर द्वारा गणना करना।

(ग) प्रयोगात्मक परीक्षा हेतु अंक विभाजन—

(1) बाह्य परीक्षक द्वारा परीक्षा—200 अंक

(क) चार बड़े प्रयोग (20+20+20+20) बड़े प्रयोगों की सूची के प्रत्येक खण्ड से दो—दो।

(ख) चार छोटे प्रयोग (10+10+10+10) छोटे प्रयोगों की सूची के प्रत्येक से दो—दो।

(ग) मौखिकी (40 अंक) प्रयोगों की सूची के आधार पर।

(घ) प्रैक्टिकल नोट–बुक एवं विभिन्न प्रपत्रों का संकलन (40 अंक)।

(2) आन्तरिक परीक्षा–200 अंक

(क) सत्रीय कार्य (100 अंक)–

	सत्रीय कार्य का विभाजन	100 अंक
उपस्थिति एवं अनुशासन		10
लिखित कार्य		20
दो वर्षों में 5 टेस्ट के आधार पर		50
मौखिकी		20
	योग ..	100 अंक

(ख) औद्योगिक प्रतिष्ठानों द्वारा प्रदत्त श्रेणी के आधार पर 100 अंक।

टीप–

1–प्रयोगात्मक परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिये 50 प्रतिशत अंक पाना आवश्यक है।

2–प्रत्येक धारा के लिये 4 या 5 कार्य–स्थल का चयन करना होगा और एक कार्य–स्थल पर 4 या 5 छात्र ही एक समय पर प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

3–एक रोजगार (जाब) से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के कार्यों का अवलोकन करके छात्रों से उन कार्यों को कराना है जिससे उसे रोजगार से सम्बन्धित योग्यताओं एवं क्षमताओं का विकास तथा आदतों का निर्माण किया जा सके। इसका उद्देश्य छात्रों में अर्जित सैद्धान्तिक ज्ञान एवं प्रयोगात्मक कार्यों को कार्य के रूप में परिणित करना है।

4–कार्य का निरीक्षण अध्यापक तथा स्वामी (इम्प्लायर) द्वारा किया जायेगा। परीक्षण कार्य अध्यापक/स्वामी (इम्प्लायर) की अनुशंसा के आधार पर किया जायेगा। यह 200 अंक का होगा। वाह्वय परीक्षक द्वारा शेष 200 अंक में परीक्षण किया जायेगा।

5–प्रत्येक छात्र प्रयोगात्मक कार्यों का पूर्ण लेखा रखेगा जिसे वाह्यय परीक्षक परीक्षण कार्य करते समय ध्यान रखेगा।

6–छात्र को छात्र–वृत्ति देने का प्रावधान होना चाहिये।

7–छात्र को कार्य स्थल पर पूर्ण समय तक रहना चाहिये। उन्हें प्रतिदिन विद्यालय आने या जाने की आवश्यकता नहीं है।

संस्तुत पुस्तकें :–

1–सहकारिता–प्रकाश–साहित्य भवन, आगरा, मूल्य 35.00 रु0।